सर्वनाम

अस्मद

इससे पहले कि आप सर्वनाम के अर्थ को जानें, हम आपको पुरुष के बारे में बताना चाहेगें। इससे आपको अनुवाद करने अथवा अर्थ समझने में परेशानी नहीं होगी।

जैसा कि आप जानते हैं, संस्कृत में तीन वचन (एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन) होते हैं। वैसे ही, पुरुष भी तीन प्रकार के होते हैं। यहाँ पुरुष का अर्थ पुँल्लिङ्ग से नहीं है।

(1) प्रथम पुरुष (सः, तौ, ते, सा, ते, ता, तत्, ते, तानि, तेन, तया, तौ)

(2) मध्यम पुरुष (त्वम्, युवाम्, यूयम्)

(3) उत्तम पुरुष (अहम्, आवाम्; वयम्)

इनका प्रयोग धातुरुप एवं क्रिया पदों के साथ होता है।

सर्वनाम

वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।

राम: भोजन खादति।

स: भोजनं खादति।

यहाँ राम: के स्थान पर प्रयुक्त शब्द 'स: (वह)' सर्वनाम है।

अब हम कुछ सर्वनाम शब्दों से आपका परिचय करवाएंगे।

अस्मद

(1)अस्मद

(क) अहम् –(मैं)

'अहम्' शब्द अस्मद के प्रथमा विभक्ति, एकवचन, उत्तम पुरुष का रुप है। इसका अर्थ है, मैं।

अहं पठामि।	मैं पढ़ता हूँ।
अहं गच्छामि।	मैं जाता हूँ।
अहं वदामि।	मैं बोलता हूँ।
अहं नमामि।	मैं नमस्कार करता हूँ।

(ख) वयम् –(हम सब)

'वयम्' शब्द अस्मद शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, बहुवचन, उत्तम पुरुष का रुप है। इसका अर्थ है, हम सब।

वयं पठामः।	हम सब पढ़ते हैं।
वयं गच्छामः।	हम सब जाते हैं।
वयं वदामः।	हम सब बोलते हैं।
वयं नमामः।	हम सब नमस्कार करते हैं।

(ग) माम् (मुझको/मेरे को)

'माम्' शब्द अस्मद शब्द रुप के द्वितीया विभक्ति, एकवचन, उत्तम पुरुष का रुप है। इसका अर्थ है, मुझको/मेरे को।

चित्रं माम् पश्येयम्।	मुझे चित्र देखने दो।
भगवनं माम् नमेयम्।	मुझे भगवान को नमस्कार करने दो।
श्लोकं माम् स्मरेयम्।	मुझे श्लोक याद करने दो।
जलं माम् पिबेयम्।	मुझे जल पीने दो।

(घ) अस्मान्

'अस्मान्' शब्द अस्मद शब्द रुप के द्वितीया विभक्ति, बहुवचन, उत्तम पुरुष का रुप है। इसका अर्थ है, हम सबको।

चित्रं अस्मान् पश्येम्।	हमें चित्र देखने दो।
भगवनं अस्मान् नमेम।	हमें भगवान को नमस्कार करने दो।
श्लोकम् अस्मान् स्मरेम।	हमें श्लोक याद करने दो।
जलं अस्मान् पिबेम।	हमें जल पीने दो।

(ङ) मम (मेरा)

'मम्' शब्द अस्मद शब्द रुप के षष्ठी विभक्ति, एकवचन, उत्तम पुरुष का रुप है। इसका अर्थ है, मेरा।

मम नाम: राम: अस्ति।	मेरा नाम राम है।
मम पितु: नाम दशरथ अस्ति।	मेरे पिता का नाम दशरथ है।
मम पार्श्व अनेकानि कन्दुकानि सन्ति।	मेरे पास बहुत सारी गेंदें हैं।
मम विद्यालय: ग्रामे अस्ति।	मेरा विद्यालय गाँव में है।

(च) अस्माकम् (हमारा)

'अस्माक' शब्द अस्भद शब्द रुप के षष्ठी विभक्ति, बहुवचन, उत्तम पुरुष का रुप है। इसका अर्थ है, हमारा।

भारत अस्माकं राष्ट्र अस्ति।	भारत हमारा राष्ट्र है।
अस्माकं प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह अस्ति।	हमारे प्रधानमंत्री का नाम डा. मनमोहन सिंह है।
अस्माकं विद्यालये निपुणा छात्रा: पठन्ति।	हमारे विद्यालय में निपुण छात्र पढ़ते हैं।
अस्माकं गृहे विविधानि वस्तूनि सन्ति।	हमारे घर में अनेक प्रकार की वस्तुएं हैं।

अस्माकं शहरे चिकित्सालयं:, मनोरञ्जन स्थलं च स्त:।	हमारे शहर में चिकित्सालय और मनोरञ्जन स्थल हैं।

युष्मद

(1) त्वम्

'त्वम्' शब्द युष्मद शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, एकवचन का रुप है। इसका अर्थ है, (तू, तुम)।

त्वं पठसि।	तुम पढ़ते हो।
त्वं गच्छसि।	तुम जाते हो।
त्वं वदसि।	तुम बोलते हो।
त्वं नमसि।	तुम नमस्कार करते हो।

(2) यूयम्

'यूयम्' शब्द युष्मद शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रुप है। इसका अर्थ है, तुम सब।

यूयं पठथ।	तुम सब पढ़ते हो।
यूयं गच्छथ।	तुम सब जाते हो।
यूयं वदथ।	तुम बोलते हो।
यूयं नमथ।	तुम नमस्कार करते हो।

(3) त्वाम्

'त्वाम्' शब्द युष्मद् शब्द रुप के द्वितीया विभक्ति, एकवचन का रुप है। इसका अर्थ है, (तुमको/तुझको)।

स: त्वाम् विदेशम् नयति	वह तुमको विदेश ले जाता है।
आचार्य: त्वाम् धर्म शास्ति	आचार्य तुमको धर्म सिखाता है।
स: त्वाम् नमति	वह तुमको नमस्कार करता है।
माता त्वाम् दण्डयति	माता तुमको सज़ा देती है।

(4) युष्मान्

'युष्मान्' शब्द युष्मद् शब्द रुप के द्वितीया विभक्ति, बहुवचन का रुप है। इसका अर्थ है, तुम सबको।

सः युष्मान् विदेश नयति।	वह तुम सबको विदेश ले जाता है।
आचार्यः युष्मान् धर्मं शास्ति।	आचार्य तुम सबको धर्म सिखाता है।
सः युष्मान् नमति।	वह तुम सबको नमस्कार करता है।
माता युष्मान् दण्डयति।	माता तुम सबको दण्ड देती है।

(5) तव्

'तव्' शब्द युष्मद् शब्द रुप के षष्ठी विभक्ति, एकवचन का रुप है। इसका अर्थ है, (तेरा, आपका)।

तव नामः रामः असि।	तेरा नाम राम है।
तव पितुः नामः दशरथ असि।	तुम्हारे पिता का नाम दशरथ है।
तव पार्श्वे अनेकानि कन्दुकानि स्थ।	तुम्हारे पास बहुत सारी गेंदें हैं।
तव विद्यालयः ग्रामे असि।	तुम्हारा विद्यालय गाँव में है।

(6) युष्माकम्

'युष्माकम्' शब्द युष्मद् शब्द रुप के षष्ठी विभक्ति, बहुवचन का रुप है। इसका इसका अर्थ है, तुम्हारा।

युष्माकं राष्ट्रऽपि भारत असि।	भारत तुम्हारा राष्ट्र भी है।
युष्माकं प्रधानमंत्रीऽपि डा. मनमोहन सिंहः असि।	तुम्हारे प्रधानमंत्री भी डा. मनमोहन सिंह हैं।
युष्माकं विद्यालये निपुणा छात्राः पठथ।	तुम्हारे विद्यालय में निपुण छात्र पढ़ते हैं।
युष्माकं गृहे विविधानि वस्तूनि स्थ।	तुम्हारे घर में बहुत सारी वस्तुएँ हैं।
युष्माकं शहरे चिकित्सालयः मनोरञ्जन स्थलं च स्थः।	तुम्हारे शहर में चिकित्सालय और मनोरञ्जन स्थल हैं।

तद् शब्द

(1) सः

'सः' शब्द तद् (वह) पुँल्लिङ्ग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, एकवचन का रुप है। इसका अर्थ है, वह (पुँल्लिङ्ग)।

सः पठति।	वह पढ़ता है।
सः गच्छति।	वह जाता है।
सः वदति।	वह बोलता है।
सः नमति।	वह नमस्कार करता है।

(2) ते

'ते' शब्द तद् (वह) पुँल्लिङ्ग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रुप है। इसका अर्थ है, वे।

ते पठन्ति।	वे पढ़ते हैं।
ते गच्छन्ति।	वे जाते हैं।
ते वदन्ति।	वे बोलते हैं।
ते नमन्ति।	वे नमस्कार करते हैं।

(3) तत्

'तत्' शब्द तद् (वह) नपुँसकलिङ्ग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, एकवचन का रुप है। इसका अर्थ है, वह।

तत् चित्रम् अस्ति।	वह चित्र है।
तत् पुष्पम् अस्ति।	वह पुष्प है।
तत् पात्रम अस्ति।	वह बर्तन है।
तत् उद्यानम् अस्ति।	वह उद्यान है।

(4) तानि

'तानि' शब्द तद् (वे) नपुँसकलिङ्ग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रुप है। इसका अर्थ है, वे।

तानि चित्राणि सन्ति।	वे चित्र हैं।
तानि पुष्पाणि सन्ति ।	वे पुष्प हैं।
तानि पात्राणि सन्ति ।	वे बर्तन हैं।
तानि उद्यानानि सन्ति ।	वे उद्यान हैं।

किम् शब्द

किम् शब्दों की सहायता से आप प्रश्न पूछ सकते हैं।

(1) क:

'क:' शब्द किम् शब्द रुप (कौन) पुँल्लिङ्ग प्रथमा विभक्ति, एकवचन का रुप है। इसका अर्थ है, कौन।

क: पठति?	कौन पढ़ता है?
क: गच्छति?	कौन जाता है?
क: वदति?	कौन बोलता है?
क: नमति?	कौन नमस्कार करता है?

(2) के

'के' शब्द किम् शब्द रुप (कौन) पुँल्लिङ्ग प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रुप है। इसका अर्थ है, कौन (बहुवचन; पुँल्लिङ्ग)।

के पठन्ति?	कौन पढ़ते हैं?
के गच्छन्ति?	कौन जाते हैं?
के वदन्ति?	कौन बोलते हैं?
के नमन्ति?	कौन नमस्कार करते हैं?

(3) का

'का' शब्द किम् शब्द रुप (कौन) स्त्रीलि़ंग प्रथमा विभक्ति, एकवचन का रुप है। इसका अर्थ है, कौन (एकवचन; स्त्रीलिंग)।

का पठति?	कौन पढ़ती है?
का गच्छति?	कौन जाती है?
का वदति?	कौन बोलती है?
का नमति?	कौन नमस्कार करती है?

(4) का:

'का:' शब्द किम् (कौन) स्त्रीलिंग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रुप है। इसका अर्थ है, कौन (स्त्रीलिंग, बहुवचन)।

का: पठन्ति?	कौन पढ़ती है?
का: गच्छन्ति?	कौन जाती है?
का: वदन्ति?	कौन बोलती है?
का: नमन्ति?	कौन नमस्कार करती है?

(4) किम्

'किम्' शब्द किम् (कौन) नपुँसकलिंग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, एकवचन का रुप है। इसका अर्थ है, कौन (नपुँसकलिंग, एकवचन)।

किम् एतत् चित्रम् अस्ति?	क्या यह चित्र है?
किम् एतत् पुष्पम् अस्ति?	क्या यह पुष्प है?
किम् एतत् पात्रम् अस्ति?	क्या यह बर्तन है?
किम् एतत् उद्यानम् अस्ति?	क्या यह उद्यान है?

(5) कानि

'कानि' शब्द किम् (कौन) नपुँसकलिंग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रुप है। इसका अर्थ है, कौन (नपुँसकलिंग, बहुवचन)।

कानि एतानि चित्राणि?	क्या ये चित्र हैं?
कानि एतानि पुष्पाणि?	क्या ये पुष्प हैं?
कानि एतानि पात्राणि?	क्या ये बर्तन हैं?
कानि एतानि उद्यानानि?	क्या ये उद्यान हैं?

एतद् शब्द

(1) एषः

'एषः' शब्द एतद् (यह) पुँल्लिंग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, एकवचन का रुप है। इसका अर्थ है, यह (पुँल्लिंग)।

एषः पठति।	यह पढ़ता है।
एषः गच्छति।	यह जाता है।
एषः वदति।	यह बोलता है।
एषः नमति।	यह नमस्कार करता है।

(2) एते

'एते' शब्द एतद् (यह) पुँल्लिंग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रुप है। इसका अर्थ है, ये सब।

एते पठन्ति।	ये सब पढ़ते हैं।
एते गच्छन्ति।	ये सब जाते हैं।
एते वदन्ति।	ये सब बोलते हैं।
एते नमन्ति।	ये सब नमस्कार करते हैं।

(3) एषा

'एषा' शब्द एतद् (यह) स्त्रीलिंग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, एकवचन का रुप है। इसका अर्थ है, यह (स्त्रीलिंग)।

एषा पठति।	यह पढ़ती है।
एषा गच्छति।	यह जाती है।
एषा वदति।	यह बोलती है।
एषा नमति।	यह नमस्कार करती है।

(4) एता:

'एता**:**' शब्द एतद् (यह) स्त्रीलिंग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रुप है। इसका अर्थ है, ये सब (स्त्रीलिंग)।

एता: पठन्ति।	ये सब पढ़ती हैं।
एता: गच्छन्ति।	ये सब जाती हैं।
एता: वदन्ति।	ये सब बोलती हैं।
एता: नमन्ति।	ये सब नमस्कार करती हैं।

(5) एतत्

'एतत्' शब्द एतद् (यह) नपुँसकलिंग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, एकवचन का रुप है। इसका अर्थ है, यह (नपुँसकलिंग)।

एतत् चित्रम् अस्ति।	यह चित्र है।
एतत् पुष्पम् अस्ति।	यह पुष्प है।
एतत् पात्रम् अस्ति।	यह बर्तन है।
एतत् उद्यानम् अस्ति।	यह उद्यान है।

(6) एतानि

'एतानि' शब्द एतद् (यह) नपुँसकलिंग शब्द रुप के प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रुप है। इसका अर्थ है, ये सब (नपुँसकलिंग)।

एतानि चित्राणि सन्ति।	ये सब (ये) चित्र हैं।
एतानि पुष्पाणि सन्ति ।	ये सब (ये) पुष्प हैं।
एतानि पात्राणि सन्ति ।	ये सब (ये) बर्तन हैं।
एतानि उद्यानानि सन्ति ।	ये सब (ये) उद्यान हैं।

आप अपने आस-पास की वस्तुओं को देख कर उनके आधार पर संस्कृत में कुछ वाक्य बनाने का प्रयास करें।

वाक्य बनाते समय आपको इस बात का विशेष ध्यान रखना है कि जिस वचन का कर्ता है, उसी वचन की क्रिया अथवा धातु रुप का प्रयोग करें।

जैसे

<table>
<tr><td>I
स:</td><td>II
तौ</td><td>III
ते</td><td>(1)
पठति</td><td>(2)
पठत:</td><td>(3)
पठन्ति</td></tr>
<tr><td>I</td><td colspan="3">के साथ</td><td>(1)</td><td>स: पठति।</td></tr>
<tr><td>II</td><td colspan="3">के साथ</td><td>(2)</td><td>तौ पठत:।</td></tr>
<tr><td>III</td><td colspan="3">के साथ</td><td>(3)</td><td>ते पठन्ति।</td></tr>
</table>

इसी प्रकार अन्य पुरुषों एवं वचनों का अनुवाद करने का प्रयास करें।